हिन्दी

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सा विद्या या विमुक्तये
C/o. શાહ ગોવિંદજી વીરમ, ફેકટરી કમ્પાઉન્ડ, મોંઢા રોડ, ઔરંગાબાદ - ૪૩૧ ૦૦૧

સમ્યગ્જ્ઞાન પ્રવેશિકા

◆◆◆ અભ્યાસક્રમ જવાબ પત્ર ◆◆◆

८

दिसंबर - २०१८

એનરોલમેન્ટ નંબર

વિદ્યાર્થીનું નામ ____________________

પ્રશ્ન-૧ ખાલી જગ્યા

(૧)	लज्जा
(૨)	धर्म
(૩)	यमराज
(૪)	यशोधरा चरित्र
(૫)	ध्यान
(૬)	आत्मकल्याण
(૭)	नीच गोत्र
(૮)	मार्दव - नम्रता
(૯)	संवर
(૧૦)	अकार्यों
(૧૧)	अविरती
(૧૨)	सुलक्षण
(૧૩)	गुरुसाक्षीऐ
(૧૪)	बोधिबीज
(૧૫)	चंडाल जाति
(૧૬)	कल्पातीत
(૧૭)	मनोरथ रूप
(૧૮)	हंस की चोंच
(૧૯)	छेदोपस्थापनीय
(૨૦)	ज्योतिष्क

પ્રશ્ન-૨ એક જ શબ્દમાં

(૧)	हरिणगमेषीन
(૨)	वन में घूमने-रहनेवाले
(૩)	कलुषित
(૪)	कल्पोपन्न
(૫)	दया
(૬)	मनुष्य बनो
(૭)	करेमि भंते
(૮)	वसंतोत्सवादि
(૯)	अनुबंध दया
(૧૦)	लोकान्तिक
(૧૧)	आठवाँ
(૧૨)	वचन क्षमा
(૧૩)	सौधर्म वतंसक
(૧૪)	सूक्ष्म संपराय
(૧૫)	परमाधामी देव

પ્રશ્ન-૩ શબ્દનો અર્થ

(૧)	पराई निंदा करना
(૨)	सूक्ष्म
(૩)	ज्योतिष्क
(૪)	अशुचि

(૫)	स्वभाव
(૬)	प्रकार
(૭)	प्रसिद्ध
(૮)	त्यागता
(૯)	साधक
(૧૦)	छेदोपस्थानिक
(૧૧)	अंगीकार
(૧૨)	सामायिक
(૧૩)	मांग की है
(૧૪)	मैं वापस फिरता हूँ
(૧૫)	वैमानिक
(૧૬)	दोष
(૧૭)	दो प्रकार से
(૧૮)	कपट के साथ झूठ बोलकर ठगना
(૧૯)	तथा
(૨૦)	बोधि

પ્રશ્ન-૪ જોડકાં જોડો

(૧)	૪	(૬)	૮
(૨)	૭	(૭)	૧
(૩)	૧૦	(૮)	૯
(૪)	૬	(૯)	૨
(૫)	૩	(૧૦)	૫

પ્રશ્ન-૫ સંખ્યામાં જવાબ

(૧)	૧૪
(૨)	૧૭
(૩)	૧૬૨
(૪)	૮૦
(૫)	૧૫
(૬)	૮૦૦
(૭)	૯
(૮)	૧૪ લાખ
(૯)	૮
(૧૦)	૨

	પ્રશ્ન-૬ ✓ કે X		પ્રશ્ન-૭ આ વાક્ય ક્યા પાને છે તે નંબર
(૧)	✓	(૧)	૧૧
(૨)	X	(૨)	૨૪
(૩)	X	(૩)	૨
(૪)	✓	(૪)	૭
(૫)	X	(૫)	૨૧
(૬)	X	(૬)	૧૮
(૭)	✓	(૭)	૯
(૮)	✓	(૮)	૬
(૯)	X	(૯)	૧૫
(૧૦)	✓	(૧૦)	૨૩

प्रिंटिंग भूल के कारण अथवा हमसे रह गयी भूल के कारण विद्यार्थीओं को जो तकलीफ होती है, उसके लिये हम क्षमाप्रार्थी है।
ऐसे संजोगो में विद्यार्थी को उसका पूरा मार्क दिया जाता है।

भूल — [illegible]

રીમાર્ક ____________________ તપાસનારની સહી ____________________

प्रश्न - ८

१. तीसरे सपने में सिंह देखा। कामदेव आदि दुष्ट हाथीयों को भगा देगा।
2) सातवे स्वप्न में सूर्य देखा है, अतः जीवों के मिथ्यास्वरूप अंधकार को नाश करनेवाला और भामंडल से विभूषित होगा।
3) आठवे स्वप्न में ध्वज देखा। अतः कुल में ध्वज समान श्रेष्ठ होगा, उसके आगे धर्मध्वज चलेगा।

२. धर्म करने के लिए हृदय में दया तो होनी ही चाहिये परंतु उसके साथ साथ एक अनोखी बात बताते हुए कहते हैं, दृष्टि में मध्यस्थता और सौम्यता चाहिए। मध्यस्थ और सौम्य दृष्टिवाला साधक सही धर्म विचारों को सुन सकता है और गुणों के साथ जुडकर दोषों को त्याग सकता है। जो सब जगह रागद्वेष रहित हो वह मध्यस्थ सौम्य दृष्टि मानना। मध्यस्थ रहकर हम सच्चा धर्म विवेक से देख सकते हैं। आज के समय में इस दृष्टि की नितांत आवश्यकता है।

३. देवलोक में राजादेव, नौकरदेव वगैरह की व्यवस्था होती है। इस तरह की व्यवस्थावाले देव को कल्पोपन्न देव और ऐसी व्यवस्था नहीं है वह देव कल्पातीत देव कहलाते है। परमात्मा तीर्थंकरों के कल्याणको में महोत्सव आदि करने का आचार कल्पोपन्न देवों का है। नव ग्रैवयके और पाँच अनुतर ये कल्पातीत है, बाकी के सभी देव कल्पोपन्न है।

४. जन्म, जरा, मृत्युमय इस संसार में संकट के समय या मृत्यु के समय कोई भी शरण नहीं दे सकता। यमराज के पंजे में से न तो नोटो के बंडल छुडा सकते है, न ही स्नेही स्वजन छुडा सकते है, सभी वहाँ लाचार है। एक मात्र धर्म ही शरण देने में समर्थ है, उसका चिंतन जीव को समाधी मरण दिलाने में समर्थ बनता है। यह अशरण भावना है।

५. यथाख्यात अर्थात सर्व जीवलोक में प्रसिद्ध चारित्र है। यथा - जैसा (अरिहंतो ने) ख्यात - कहा है, वैसा संपूर्ण चारित्र यथाख्यात चारित्र है। कषायों के संपूर्ण क्षय अथवा उपशम होने से वह अति विशुद्ध चारित्र की प्राप्ति अकषायी साधुओं को होती है। यह चारित्र 11, 12, 13 और 14 वें गुणस्थानक में रहे वीतराग को ही होता है। यह चारित्र जीव को मोक्षनगरी में पहुंचाकर अजरामर स्थान दिलाता है।